विषय-सूची

(खण्ड १)

	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय–प्रास्ताविक	१–६
रहस्यवाद का मूल-जिज्ञासा	३
उपनिषद्-मूल स्रोत	४
रहस्यवाद की अविच्छिन्न परम्परा	६
द्वितीय अध्याय–क्या जैन दर्शन में रहस्यवाद सम्भव है ?	६–२१
आस्तिक और नास्तिक दर्शन	१०
जैन दर्शन की आस्तिकता—आत्मा और परमात्मा	११
रहस्यवाद का तात्पर्य	१३
जैन तीर्थङ्कर प्रमुख रहस्यवादी	१६
आठवीं शताब्दी के बाद धर्म-साधना का नया स्वरूप	१९

(खण्ड २)

तृतीय अध्याय–जैन रहस्यवादी कवि और काव्य	२२–१२६
जैन कवियों की उपेक्षा के कारण	२२
रहस्यवादी काव्य रचना का आरम्भ	२३
कुन्दकुन्दाचार्य	२८
कार्तिकेय मुनि	३४
योगीन्दु मुनि	३७
मुनि रामसिंह	४७
आनन्दतिलक	५६
लक्ष्मीचन्द	६०
महयंदिण मुनि	६२
छीहल	६६
बनारसीदास	६९
भगवतीदास	८६
रूपचन्द्र	९१
ब्रह्मदीप	१०१
आनंदघन	१०३
यशोविजय	१११
भैया भगवतीदास	११३
पाण्डे हेमराज	१२२
ज्ञानतराय	१२४

(खण्ड ३)

चतुर्थ अध्याय–मूल्यांकन की दो दृष्टियाँ–व्यवहार-नय और निश्चय-नय	*१३०–१३८*
नय-द्वय	१३०
व्यवहार-नय	१३१
निश्चय-नय या परमार्थ-नय	१३१
व्यवहार-नय की सीमाएँ	१३३
नय-द्वय का प्रयोजन	१३५
जैनेतर साहित्य में समान दृष्टि-द्वय	१३६
पंचम अध्याय–द्रव्य व्यवस्था	*१३९–१४६*
द्रव्य का तात्पर्य	१३९
द्रव्य-भेद	१४०
जीव	१४१
पुद्गल द्रव्य	१४२
धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य	१४३
आकाश द्रव्य	१४४
काल द्रव्य	१४४
छठा अध्याय–जैन कवियों द्वारा आत्मा का स्वरूप-कथन	*१४७–१७१*
आत्मा का स्वरूप	१४७
आत्मा और शरीर में अंतर	१५०
आत्मा की अवस्थाएँ	१५२
जैनेतर सम्प्रदायों में आत्मा की अवस्थाओं का वर्णन	१५५
आत्मा ही परमात्मा	१५८
आत्मा और कर्म	१५९
आस्रव-संवर-निर्जरा	१६१
मोक्ष	१६२
परमात्मा का वास शरीर में	१६५
एक ब्रह्म के अनेक नाम	१६७
ब्रह्मानुभूति जनित आनन्द	१७१
सप्तम अध्याय–मोक्ष अथवा परमात्म-पद प्राप्ति के साधन	*१७२–१९८*
सांसारिक पदार्थों की क्षणिकता का ज्ञान	१७२
विषय सुख का त्याग	१७५
पंचेन्द्रिय नियन्त्रण	१७५
मन	१७६
बाह्य अनुष्ठान	१७९
पुस्तकीय ज्ञान	१८४
पुण्य-पाप	१८६

गुरु का महत्व १८८
रत्नत्रय-सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र १९२
रत्नत्रय ही आत्मा १९५
रत्नत्रय ही मोक्ष १९६
स्वसंवेदन ज्ञान १९७
चित्तशुद्धि पर जोर १९८

(खण्ड ४)

अष्टम अध्याय–जैन काव्य और सिद्ध साहित्य १९९–२०९
बौद्ध धर्म का विकास–महायान १९९
महायान और तन्त्र-साधना २००
मन्त्रयान २०१
वज्रयान २०१
वज्रयान और सहजयान २०२
चौरासी सिद्ध २०४
सिद्ध साहित्य और जैन काव्य २०६
नवम अध्याय–जैन काव्य और नाथ योगी सम्प्रदाय २१०–२२१
योग का अर्थ २१०
योग की परम्परा २११
नाथ सम्प्रदाय और सहजयानी सिद्धों से उसका सम्बन्ध २१२
नाथ सिद्ध और उनका समय २१३
नाथ सिद्धों का प्रभाव २१५
नाथ साहित्य और जैन काव्य २१५
हठयोग की साधना २१६
शिव-शक्ति २१८
अन्य समानताएँ २१९
निष्कर्ष २२१
दशम अध्याय–जैन काव्य और हिन्दी सन्त काव्य २२२–२३९
संत कवि २२२
संत कवि और पूर्ववर्ती साधना मार्ग २२२
संत कवि और जैन कवि २२३
योगीन्दु मुनि, मुनिराम सिंह और कबीर २२४
जैनों का परमात्मा और कबीर का ब्रह्म २२७
कबीर और संत आनन्दघन २२९
आत्मा-परमात्मा प्रिय-प्रेमी के रूप में २२९
ब्रह्म का स्वरूप २३३
अनिर्वचनीयता २३४
माया २३५

बनारसीदास और सन्त सुन्दरदास २३६
अन्य सन्त कवि २३९

(खण्ड ५)

एकादश अध्याय-मध्यकालीन धर्म साधना में प्रयुक्त कतिपय शब्दों का इतिहास २४०-२६५
सहज २४०
समरस और महासुख २४८
नाम सुमिरन और अजपा जाप २५१
निरंजन २५५
अवधू २६०
द्वादश अध्याय-उपसंहार २६६-२६८
परिशिष्ट-खोज में प्राप्त नई रचनाओं के हस्तलेखों से उद्धृत अंश २६९-२९६
अपभ्रंश—
आणंदा—आनन्दतिलक २७१
दोहाणुवेहा—लक्ष्मीचन्द २७४
दोहापाहुड़—महयंदिण मुनि २७७
आत्मप्रतिबोध जयमाल—छीहल २८१
हिन्दी—
श्री चूनरी—भगवतीदास २८२
स्फुट पद - रूपचद २८४
दोहापरमार्थ—रूपचंद २८५
अध्यात्म सवैया - रूपचंद २८७
खटोलना-गीत रूपचद २८८
मनकरहा रास—ब्रह्मदीप २८९
स्फुट पद—ब्रह्मदीप २९०
समाधितत्र—जसविजय उपाध्याय २९१
उपदेश दोहा शतक—पाण्डे हेमराज २९२
अध्यात्मपंचासिका दोहा—द्यानतराय २९४
फुटकल पद—द्यानतराय २९५
संदर्भ ग्रन्थ सूची २९७-३०४
अनुक्रमणिका ३०५-३१४
नामानुक्रमणिका ३०५
ग्रन्थानुक्रमणिका ३११